1 जय गणेश देवा

जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा ।
माता जाकी पार्वती पिता महादेवा ॥
जय गणेश देवा..

एक दन्त दयावन्त चार भुजाधारी,
माथे पे सिन्दूर सोहे, मूषे की सवारी,
दुःखियों के दुःख हरत, परमानन्द देवा,
माता जाकी पार्वती पिता महादेवा ॥
जय गणेश देवा..

पान चढ़े, फूल चढ़े और चढ़े मेवा ।
लड्डुअन का भोग लगे, सन्त करैं सेवा ॥
जय गणेश देवा..

अन्धन को आँख देत कोढियन को काया,
बाँझन को पुत्र देत, निर्धन को माया ,
भव से पार करो नाथ, भजन करुं तेरा ॥
जय गणेश देवा..

दीनन की लाज राखो, शम्भु सुत बारी ।
कामना को पूरी करो, जाऊँ बलिहारी ॥
जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा ।
माता जाकी पार्वती पिता महादेवा ॥
जय गणेश देवा..

2 सीताराम, सीताराम. . .

सीताराम सीताराम,सीताराम कहिये ।
जाहि विधि राखे राम, ताहि विधि रहिये ॥

मुख मे हो राम नाम,राम सेवा हाथ मे ।
तू अकेला नही प्यारे, राम तेरे साथ मे ॥
विधि का विधान जान, हानी-लाभ सहिये ।
जाहि विधि राखे राम, राम ताहि विधि रहिये ॥

किया अभिमान तो फिर मान नहीं पायेगा ।
होगा प्यारे वही जो श्री राम जी को भायेगा ॥
फल आशा त्याग, शुभ काम करते रहिये ।
जाहि विधि राखें राम ताहि विधि रहिये ॥

जिन्दगी की डोर सौंप हाथ दीना नाथ के ।
महलों मे राखे चाहे झोंपडी मे वास दे ॥
धन्यवाद निर्विवाद राम-राम कहिये ।
जाहि विधि राखें राम, ताहि विधि रहिये ॥

आशा एक राम जी से दूजी आशा छोड़ दे ।
नाता एक राम जी से, दूजा नाता तोड़ दे ॥
साधु-सङ्ग राम-रङ्ग अङ्ग-अङ्ग रङ्गिये ।
काम-रस त्याग प्यारे, राम-रस पगिये ॥

सीताराम, सीताराम, सीताराम कहिये ।
जाहि विधि राखे राम, ताहि विधि रहिये ॥

3 लगन लगे . . .

लगन लगे श्री राम तेरी लगन लगे । लगन लगे श्री राम तेरी लगन लगे !!
लगन लगे श्री राम तेरी लगन लगे।

जग भोगों से करूँ मै किनारा । लगन मे तेरी रहूँ मतवारा ।
निश दिन आठों याम तेरी लगन लगे ॥ लगन लगे . . .

सुख दुःख निन्दा को सम जानू । सब मे तेरा रुप पहचानू ।
सिमरु मै तेरा नाम, तरी लगन लगे ॥ लगन लगे . . .

जग मेले मे चलते फिरते । गाढ लगन से तुझे सिमरते ।
करूँ कर्म निष्काम तेरी लगन लगे ॥

तुझ से ही माँगू लगन तिहारी । मुझ पर कृपा करो इक बारी ।
हे दाता हे राम, तेरी लगन लगे ॥ लगन लगे . . .
लगन लगे श्री राम तेरी लगन लगे !! लगन लगे श्री राम तेरी लगन लगे

4 श्री राम जय राम. . .

श्री राम जय राम,जय जय राम, श्री राम जय राम जय जय राम ।
राम राम राम जयराजा राम, राम राम राम जय सीताराम ॥

श्री राम जय राम, जय जय राम, श्री राम जय राम जय जय राम ।
चन्द्र किरण कुल मण्डन राम, श्रीमद दशरथ नन्दन राम ॥

श्री राम जय राम जय जय राम, श्री राम जय राम जय जय राम ।
कौशल्या सुख वर्धनराम, विश्वामित्र प्रियधन राम ॥

श्री राम जय राम जय जय राम, श्री राम जय राम जय जय राम ।
भक्त वत्सल रघुनन्दन राम, जानकी वल्लभ सीता राम ॥

श्री राम जय राम जय जय राम, श्री राम जय राम जय जय राम ।

5 रघुपति राघव . . .

रघुपति राघव राजा राम, पतित पावन सीता राम ।
सीता राम जय सीता राम, भज प्यारे तू सीता राम ॥
रघुपति राघव राजा राम, पतित पावन सीता राम ॥

राम कृष्ण है तेरो नाम, सबको सन्मति दे भगवान ।
दीन-दयालु राजाराम, पतित पावन सीताराम ॥ रघुपति . . .

जय रघुनन्दन, जय सियाराम, जानकी वल्लभ सीताराम ।
जय यदुनन्दन जय घनश्याम, रुक्मिणी वल्लभ राधेश्याम ॥ रघुपति . . .

ईश्वर अल्लाह तेरो नाम, सब को सन्मति दे भगवान ।
रघुपति राघव राजा राम, पतित पावन सीता राम ॥

मन्दिर मस्जिद एक समान, जिसमें रहते श्री भगवान ।
रघुपति राघव राजा राम, पतित पावन सीता राम ॥

मन में राम तन में राम, सारे जग में राम ही राम ।
रघुपति राघव राजा राम, पतित पावन सीता राम ॥

हम सब तेरी हैं सन्तान, हम को नेकी दो वरदान ।
रघुपति राघव राजा राम, पतित पावन सीता राम ॥

सीता राम जय सीता राम, भज प्यारे तू सीता राम ।
रघुपति राघव राजा राम, पतित पावन सीता राम ॥

6 तेरे मन में राम . . .

तेरे मन में राम, तन में राम, रोम-रोम में राम रे ।
राम सुमिर ले, ध्यान लगा ले, छोड जगत के काम रे ॥
बोलो राम, बोलो राम, बोलो राम, राम, राम ॥. . .

माया में तू उलझा-उलझा, दर-दर धूल उडाये ।
अब करता क्यों मन भारी, जब माया साथ छुडाये ॥
दिन तो बीता दौड धूप में, ढल जाये न शाम रे
बोलो राम, बोलो राम, बोलो राम, राम, राम ॥ . . .

तन के भीतर पाँच लुटेरे, डाल रहे हैं डेरा ।
काम, क्रोध,मद,लोभ,मोह ने तुझ को ऐसा घेरा ।
भूल गया तू राम रटन को, भूला पूजा का काम रे ॥
बोलो राम, बोलो राम, बोलो राम, राम, राम ॥ . . .

बचपन बीता खेल कूद में, आई जवानी सोया ।
देख बुढापा सोचे अब तू, क्या पाया क्या खोया ।
देर नहीं है अब भी बन्दे, ले-ले उसका नाम रे ॥
बोलो राम, बोलो राम, बोलो राम, राम, राम ॥ . . .

7 अब मुझे राम भरोसा तेरा. . .

अब मुझे राम भरोसा तेरा, अब मुझे राम भरोसा तेरा ।

मधुर मनोहर नाम पान कर, मुदित हुआ मन मेरा ॥ अब मुझे. . .

दीपक नाम जगा अब भीतर, मिटा अज्ञान अन्धेरा ॥ अब मुझे . . .

निशा निराशा दूर हुई सब, आया शान्त सवेरा ॥ अब मुझे. . .

8 दाता एक राम . . .

दाता एक राम, भिखारी सारी दुनियाँ । राम एक देवता, पुजारी सारी दुनियाँ ॥
द्वारे पे उसके आके कोई भी पुकारता । परम कृपा से अपनी भव से उतारता ।
ऐसे दीनानाथ पर बलिहारी सारी दुनियाँ ॥ दाता एक. . .
दो दिन का है जीवन प्राणी, करले पुकार तू । प्यारे प्रभू को अपने मन में निहार तू ।
बिना हरि नाम के दुखारी सारी दुनियाँ ॥ दाता एक. . .
नाम का प्रकाश जब हृदय में आयेगा । प्यारे श्री राम का तू दर्शन पायेगा ।
ज्योति से जिसकी है उजियारी सारी दुनियाँ ॥ दाता एक. . .

9 तेरा रामजी करेंगे . . .

तेरा रामजी करेंगे बेडा पार, उदासी मन काहे को डरे ॥
नैया तेरी राम हवाले, लहर-लहर प्रभु आये संभाले ।
हरि आप ही उठायें तेरा भार, उदासी मन काहे को डरे ॥ तेरा रामजी. . .
काबू में मझधार उसी के, हाथों में पतवार उसी के ।
सहज किनारा मिल जायेगा, परम सहारा मिल जायेगा ।
डोरी सौंप के तो देख इक बार, उदासी मन काहे को डरे ॥ तेरा रामजी. . .
तू निर्दोष तुझे क्या डर है, पग-पग पर साथी ईश्वर है ।
जरा भावना से करियो पुकार, उदासी मन काहे को करे ।
काहे को करे, काहे को डरे, तेरा रामजी करेंगे बेडा पार ॥ तेरा रामजी. . .

10 भजमन राम चरण . . .

भजमन राम चरण चित लाई ।
जिन चरणों से निकसि सुरसरी, शंकर जटा बढाई ।
जटा शंकरी नाम परयो है, त्रिभुवन तारण आई ॥ भजमन राम. . .

जिन चरणन की चरण पादुका, भरत रह्यो लवलाई ।
सोई चरण केवट धोइ लीन्हो, तब हरि नाव चढाई ।
सोई चरण सन्तन जन सेवत सदा रहत सुखदाई ॥ भजमन राम. . .

कपि सुग्रीव बन्धुगन व्याकुल तिन जय छत्र धराई ।
रिपु को अनुज विभीषण निसिचर परसत लंका पाई ।
दंडक वन प्रभू पावन कीन्हो ऋषियन त्रास मिटाई ॥ भजमन राम. . .

सोई प्रभू त्रिलोक के स्वामी कनक के मृग-संग धाई ।
शिव शंकरादिक अरु ब्रह्मादिक शेष सहस्र मुख गाई ।
तुलसिदास मारुति सुत की, निज मुख करत बडाई ॥ भजमन राम. . .

11 तू राम भजन कर प्राणी . . .

तू राम भजन कर प्राणी, तेरी दो दिन की जिन्दगानी ।
काया माया बादल छाया, मूरख मन काहे भरमाया ।
उड जायेगा सांस का पंछी, फिर क्या आनी जानी ॥ तू राम. . .

सजन स्नेही सुख के संगी,दुनिया की है चाल दुरंगी ।
नाच रहा है काल शीश पे, चेत-चेत अभिमानी ॥ तू राम. . .

जिसने राम नाम गुन गाया,उसपर पडे न दुःख की छाया ।
निर्धन का धन राम-नाम है, मैं हूँ राम दिवानी ॥ तू राम. . .

तू राम भजन कर प्राणी, तेरी दो दिन की जिन्दगानी ।
मुख बोल राम की वाणी, मनवा बोल राम की वाणी ॥ तू राम. . .

12 जीवन की घडियाँ . . .

जीवन की घडियाँ वृथा न खो, राम जपो, राम जपो ॥

साथी बना ले राम को, मन में बैठा ले राम को ।
लम्बी चादर तान न सो, राम जपो, राम जपो ॥ जीवन की. . .

राम ही जीवन धार है, राम ही सुख का सहारा है ।
श्वासों की माला में राम पिरो, राम जपो, राम जपो ॥ जीवन की. . .

मन की गति सम्भालिये,भीक्त की आदत डालिये ।
पल-पल अपना वृथा न खो, राम जपो, राम जपो ॥ जीवन की. . .

यह चोला मिला शुभ कर्म का, करने को सौदा धर्म का ।
कौडी के बदले हीरा न खो, राम जपो, राम जपो ॥ जीवन की. . .

13 मन में जग जाये . . .

मन में जग जाये जोत तिहारी, राम ऐसी करो कृपा ॥
कृपा याचक खडा द्वारे, भिक्षा दे दो राम प्यारे ।
चढी रहे नाम खुमारी, राम ऐसी करो कृपा ॥ मन में. . .

मोह माया का मिटे अंधेरा,यह जीवन हो जाये तेरा ।
गूँजे तान तुम्हारी, राम ऐसी करो कृपा ॥ मन में. . .

भव सागर में घिर गई नैय्या,तव कृपा बिन कौन खिवैय्या ।
दीजो पार उतारी, राम ऐसी करो कृपा ॥ मन में. . .

सुरती शब्द का मेल मिलदो, मेरा हृदय कमल खिला दो ।
करो भीतर उजियारा, राम ऐसी करो कृपा ॥ मन में. . .

सदा अनुग्रह तेरा माँगूं, तव कृपा से भव को लाँघूं ।
मुझ को न देयो बिसारि, राम ऐसी करो कृपा ॥ मन में. . .

14 ये विनती है पल-पल . . .

मिलता है सच्चा सुख केवल, भगवान तुम्हारे चरणो में ।
ये विनती है पल-पल क्षन-क्षन, रहे ध्यान तुम्हारे चरणो में ।
श्रीराम तुम्हारे चरणो में, रहे ध्यान तुम्हारे चरणो में ॥

होठों पे तुम्हारा नाम रहे, सुमिरन ये सुबह और शाम रहे ।
दिन रात यही मेरा काम रहे, रहे ध्यान तुम्हारे चरणो में ॥ श्रीराम. . .

चाहे संकट ने घेरा हो, और चारों ओर अंधेरा हो । श्रीराम. . .

चाहे काँटो पर भी चलना हो, चाहे ज्वाला में भी जलना हो ।
चाहे छोड के देश निकलना हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणो में ॥ श्रीराम. . .

चाहे बैरी सब संसार बने, मेरा जीवन तुझ पर भार बने ।
चाहे मृत्यु गले का हार बने, रहे ध्यान तुम्हारे चरणो में ॥ श्रीराम. . .

15 राम नाम लौ लागी . . .

राम नाम लौ लागी, अब मोहे राम नाम लौ लागी ।

उदय हुआ शुभ भाग्य का भनु, भक्ति भवानी ॥ अब मोहे . . .

मित गये संशय भव भय सारे, भ्रान्ति भूल की भागी ॥ अब मोहे. . .

पाप हरण श्री राम चरण का, मन बन गया अनुरागी ॥ अब मोहे. . .

16 मेरे राम. . .

मेरे राम रघुनाथ तेरी जय होवे ।

जय होवे तेरी जय होवे,जय होवे तेरी जय होवे ॥ मेरे राम . . .

नित्य प्रति गुण तेरे गाऊँ, तेरे चरणो में शीश नवाऊँ ।

गद्‌ गद्‌ प्रेम से सदा पुकारूँ, जय होवे तेरी जय होवे ॥ मेरे राम . . .

प्रेम मगन मन होवे मेरा, यह जीवन हो जाए तेरा ।

सदा प्रेम से यही पुकारूँ, जय होवे तेरी जय होवे ॥ मेरे राम . . .

17 जय श्री राधे. . .

जय श्री राधे, जय नन्द नन्दन ।

राधा वल्लभ जन मन रन्जन ॥

विट्ठला हरि विट्ठला, पाण्डुरङ्ग विट्ठला ।

विट्ठल, विट्ठल, विट्ठल, विट्ठल,विट्ठल, विट्ठल पाण्डुरङ्ग ॥

जय हरि विट्ठल, पाण्डुरङ्ग, गुरु हरि विट्ठल, पाण्डुरङ्ग ।

श्री हरी विट्ठल, पाण्डुरङ्ग, पाण्डुरङ्ग, पण्डरीनाथा ॥

पाण्डुरङ्ग जय जय विट्ठल, पाण्डुरङ्ग, पण्डरीनाथा ।

पाण्डुरङ्ग जय जय विट्ठल, विट्ठला हरि विट्ठला ॥

18 श्री राम, तुम्हारे मन्दिर मे . . .

श्री राम, तुम्हारे मन्दिर में, मैं दीप जलाने आया हूँ ॥
नीरस सूने जीवन में, मन के अन्धेरे कोने में ।
साँसों की उजली आशामय, शुभ ज्योति जगाने आया हूँ ॥ श्री. . .

पूजन विधि-विधान नहीं,और सिमरन-साधन ध्यान नहीं ।
पर विनय-भक्ति सुगन्ध भरे, दो पुष्प चढाने आया हूँ ॥ श्री. . .

गीत-संगीत का ज्ञान नहीं, मुझे ताल सुरो की भान नहीं ।
पर मर्म हृदय की तारों की, झंकार सुनाने आया हूँ ॥ श्री. . .

19 मैं सादर सीस निवाता हूँ. . .

मैं सादर सीस निवाता हूँ, श्री राम तुम्हारे चरणो में ।
कुछ अपनी विनती सुनाता हूँ, श्री राम तुम्हारे चरणो में ॥

घर में या वन में देह रहे, मन का पद पंकज गेह रहे ।
बढता अनुदिन नव नेह रहे, श्री राम तुम्हारे चरणो में ॥

जिस-जिस योनि में भ्रमण करूँ, जो-जो शरीर मै ग्रहण करूँ ।
वहाँ कमल भृंग बन रमण करूँ ,श्री राम तुम्हारे चरणो में ॥

तेरे ही गुणो का हो कीर्तन, भूलूँ न कभी पल-भर क्षण-भर ।
तन-मन-धन मेरा हो अर्पण, श्री राम तुम्हारे चरणो में ॥

सुख सम्पत्ति की चाह नहीं, परिवार का मोह मिटे परवाह नहीं ।
हो जाये जीवन निर्णय यहीँ, श्री राम तुम्हारे चरणो में ॥

हम दीन हीन जन रामेश्वर, तेरी ही कृपा पर है निर्भर ।
हो जाये किसी भी भाँति गुजर, श्री राम तुम्हारे चरणो में ॥

20 मनमें जग जाये जोत तुम्हरी . . .

मनमें जग जाये जोत तुम्हरी, राम ऐसी करो कृपा ॥
कृपा याचक खडा द्वारे, भिक्षा देदो राम प्यारे ।
चढी रहे नाम खुमारी , राम ऐसी करो कृपा ॥ मन में. . .

मोह माया का मिटे अन्धेरा, यह जीवन हो जाय तेरा ।
गूंजे तान तुम्हरी, राम ऐसी करो कृपा ॥ मन मे. . .

भव सागर में घिर गई नैया, तव कृपा बिन कौन खिवैय्या ।
दीजो पार उतारी, राम ऐसी करो कृपा ॥ मन में. . .

सुरति शब्द का मेल मिला दो, मेरा हृदय कमल खिला दो ।
करो भीतर उजियारा, राम ऐसी करो कृपा ॥ मन में. . .

सदा अनुग्रह तेरा माँगूँ, तव कृपा से भव को लाँघू ।
मुझ को न दियो विसारी, राम ऐसी करो कृपा ॥ मन में. . .

21 रघुवर, तुमको मेरी लाज . . .

रघुवर, तुमको मेरी लाज, रघुवर तुमको मेरी लाज ।

सदा सदा मैं शरण तिहारी, तुमहि गरीब निवाज ॥ रघुवर तुम. . .

पतित उधारन विरद तुम्हारी, सबनन सुनी आवाज ॥ रघुवर तुम. . .
हौं तो पतित परातन कहिये, पार उतारो जहाज ॥ रघुवर तुम. . .
अध-खण्डन दुःख-भंजन जन के, यही तिहारो काज ॥ रघुवर तुम. . .
तुलसि दास पर किरपा कीजै, भक्ति दान देहु आज ॥ रघुवर तुम. . .

22 बोलो राम...

बोलो राम, बोलो राम,बोलो राम,राम,राम ।
तुझमें राम, मुझमें राम, सब में राम समाया ।
सबसे करलो प्यार जगत में, कोई नहीं है पराया ॥ बोलो राम...
जितने हैं संसार में प्राणी, सब में है इक ज्योती ।
एक बाग के फूल हैं सारे, इक माला के मोती ।
पहचानो किस प्यार से प्रभु ने, हम सब को है बनाया ॥ बोलो राम...
एक जमी है बैठक सब की, सब पर उसकी छाया ।
दाना पानी देने वाला, एक हमारा दाता ।
पहचानो किस प्यार से प्रभु ने, इस दुनिया को रचाया ॥ बोलो राम...
ऊँच नीच और जाति-पाति के, मोह जाल को तोडो ।
अपना पराया भेद-भाव भी, अन्जानो को छोडो ।
पहचानो किस प्यार से प्रभु ने, हम सबको अपनाया ॥ बोलो राम...

23 यह विनती है पल-पल ...

श्री राम, श्री राम, श्री राम, श्री राम ।
यह विनती है पल-पल क्षण-क्षण, हो ध्यान तुम्हारे चरनो में ॥ श्री राम...

होठों पे तुम्हारा नाम रहे,शुभ सिमरन यह सब याम रहे ।
दिन रात यही मेरा काम रहे ॥ श्री राम...

चाहे संकट ने मुझे घेरा हो, और चारो ओर अन्धेरा हो ।
पर चित्त न डग-मग मेरा हो ॥ श्री राम...

चाहे कांटो पे भी चलना हो, औ ज्वाला में भी जलना हो ।
चाहे छोड के देश किलना हो ॥ श्री राम...

चाहे बैरी सब संसार बने, चाहे जीवन मुझ पर भार बने ।
चाहे मृत्यु गले का हार बने ॥ श्री राम...

24 जय हरि कृष्णा . . .

जय हरि कृष्णा, जय हरि कृष्णा, गोवर्धन गिरधारी ।
राधा मोहन, राधा जीवन मङ्गल कुन्ज बिहारी ॥

श्री कृष्ण गोविन्द हरे मुरारी, हे नाथ नारायण वासुदेवा ।
गोविन्द जय जय गोपाल जय जय, राधा रमण हरी गोविन्द जय जय ॥

अच्युतम् केशवम् श्री नारायणम् , कृष्ण दामोदरम् वसुदेवम् भजे ।
श्री धरम माधवम् गोपिका वल्लभम् , जानकी नायकम रामचन्द्रम् भजे ॥

परम युगल मधु नाम, चाहे कृष्ण कहो चाहे राम ।
जय राधावर कुन्ज बिहारी, मुरलीधर गोवर्धन धारी ॥

25 रामा कृष्णा गोविन्दा. . .

रामा कृष्णा गोविन्दा,वेणु विलोला गोविन्दा ॥
रामा कृष्णा गोविन्दा, विजय नन्दा गोविन्दा ॥
रामा कृष्णा गोविन्दा, कृष्णा रामा गोविन्दा ॥

भजो मन राम, भजो मन राम,पान्डुरगं श्री रगां, भजो मन राम ॥
भज मन यादव, भजो मन राम,भजो मन गोविन्द, भजो मन मुकुन्द ॥
भजो मन आनन्द भजो मन राम, भजो मन राम, भजो मन राम ॥

हरे राम, हरे राम, राम राम हरे हरे । हरे कृष्ण, हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे ॥

राम राघव,राम राघव,राम राघव रक्षमाम ।
कृष्ण केशव, कृष्ण केशव कृष्ण केशव पाहिमाम ॥

विट्ठले, विट्ठले, विट्ठले, विट्ठले, जय जय विट्ठले, जय जय विट्ठले ॥
राम कृष्ण हरि, मुकुन्द मुरारी,पाण्डुरगं, पाण्डुरगं, पाण्डुरगं, पाण्डुरगं ॥

जय जय बिट्ठला पाण्डुरगं बिट्ठला, पुन्डलिक वरदा पाण्डुरगं बिट्ठला ॥

26 जग मे सुन्दर हैं...

जग मे सुन्दर हैं दो नाम, चाहे कृष्ण कहो या राम ।
बोलो राम, बोलो राम, बोलो राम राम राम ॥
बोलो श्याम, बोलो श्याम, बोलो श्याम श्याम श्याम ॥

माखन ब्रिज मे एक चुरावे, एक बेर भिलनी के खावे ।
प्रेम भाव से भरे अनोखे, दोनो के हैं काम ॥ बोलो राम...

एक हृदय मे प्रेम बढावे, एक पाप सन्ताप मिटावे ।
दोनो सुख के सागर हैं और, दोनो पूरण काम ॥ बोलो राम...

एक कंस पापी को मारे, एक दुष्ट रावण संहारे ।
दोनो दीन के दुख हरत हैं, दोनो बल के धाम ॥ बोलो राम...

एक राधिका के संग साजे, एक जानकी संग विराजे ।
चाहे सीता राम कहो या, बोलो राधे श्याम ॥ बोलो राम...

दोनो हैं घट-घट के वासी, दोनो हैं आनन्द प्रकाशी ।
विन्दु सदा गोविन्द भजन से, मिलता है विश्राम ॥ बोलो राम...

जग मे सुन्दर हैं दो नाम, चाहे कृष्ण कहो या राम ।
बोलो राम, बोलो राम, बोलो राम राम राम ॥
बोलो श्याम, बोलो श्याम, बोलो श्याम श्याम श्याम ॥

27 रे तूने कबहूँ न . . .

रे तूने कबहूँ न कृष्ण कह्यो । जन्म तेरा बातों ही बीत गयो ॥
रे तूने कबहूँ न कृष्ण कह्यो ॥

पाँच बरस का भोला भाला, अब तो बीस भयो ॥
मगर पचीसी माया कारण, देश विदेश गयो ॥ रे तूने . .

तीस बरस की अज मति उपजी, तो लोभ बढ्यो नित नयो ॥
माया जोडी तूने लाख करोडी, पर अजहूँ न कृष्ण कह्यो ॥ रे तूने . .

वृध्द भयो तब आलस उपजी, कफ नित कंठ रह्यो ।
संगति कबहूँ न कीन्हि तूने वृत्या जन्म गयो ॥ रे तूने . .

ये संसार मतलब का लोभी, झूठा साथ रचयो ।
कहत कबीर समझ रे मन मूरख, तू क्यों भूल गयो ॥ रे तूने . .

रे तूने अबहूँ न कृष्ण कह्यो । जन्म तेरा बातों ही बीत गयो ।रे तूने . .

28 मुकुन्द माधव गोविन्द बोल . . .

मुकुन्द माधव गोविन्द बोल, केशव माधव हरि हरि बोल ।

राम राम बोल, राम राम बोल । राम राम बोल,राम राम बोल ॥ मुकुन्द. .

शिव शिव बोल, शिव शिव बोल । शिव शिव बोल, शिव शिव बोल ॥ मुकुन्द. .

कृष्ण कृष्ण बोल, कृष्ण कृष्ण बोल । कृष्ण कृष्ण बोल, कृष्ण कृष्ण बोल ॥ मुकुन्द. .

मुकुन्द माधव गोविन्द बोल, केशव माधव हरि हरि बोल

29 बनवारी रे ...

बनवारी रे जीने का सहारा तेरा नाम रे।
मुझे दुनिया वालों से क्या काम रे॥

झूठी दुनिया झूठे बंधन झूठी है ये माया।
झूठा सांस का आना जाना, झूठी है ये काया ।
है यहाँ सांचो तेरो नाम रे॥ बनवारी रे ...

रंग मे तेरे रंग गई गिरिधर, छोड दिया जग सारा ।
बन गई तेरे प्रेम की जोगन, ले के नाम तिहारा ।
हो मुझे प्यारा तेरा नाम रे॥ बनवारी रे ...

दर्शन तेरा जिस दिन पाऊँ, हर चिन्ता मिट जाये ।
जीवन मेरा इन चरणो में आशा की ज्योति जगाये ।
हो मेरी बांह पकड लो श्याम रे ॥ बनवारी रे ...

30 नटवर नागर नन्दा ...

नटवर नागर नन्दा, भजो रे मन गोविन्दा ।

मोर मुकुट मुख चन्दा, भजो रे मन गोविन्दा ॥

सब देवों में कृष्ण बडे हैं, जँऊँ , तारों में चन्दा । भजो रे...

सब सखियन में राधा बडी है, जँऊँ नदियों में गंगा । भजो रे...

धरती पर शेषनाग बडे हैं, वीरों में हनुमन्ता । भजो रे...

तुम्ही हो नटवर,तुम्ही हो नागर, तुम्ही हो भानु मुकुन्द ॥ भजो रे...

31 सब से ऊँची . . .

सब से ऊँची प्रेम सगाई ॥

दुर्योधन के मेवे त्यागे, साग विदुर घर खाई ।

झूठे फल शबरी के खाये बहु विधि प्रेम लगाई ॥

सब से ऊँची . . .

प्रेम के बस अर्जुन रथ हाँक्यो, भूल गये ठकुराई ।

ऐसी प्रीति बढी वृन्दावन, गोपिन नाच नचाई ॥

सब से ऊँची . . .

32 वह काला . . .

वह काला एक बांसुरी वाला, सुधि बिसराय गयो मोरी रे ।

माखन चोर जो नन्द किशोर, वो कर गयो मन की चोरी रे ॥ सुधि . .

पनघट पे मोरी बइयां मरोरी, मैं बोली तो मेरी मटकी फोरी ।

पइयां परुं करुं विनती मैं, पर माने न एक वो मोरी रे ॥ सुधि . . .

छिप गयो फिर एक तान सुनाके, कहाँ गयो एक बाण चलाके ।

गोकुल ढूँढा मैने मथुरा ढूँढी, कोई नगरिया न छोडी रे ॥ सुधि . . .

वह काला एक बाँसुरी वाला, सुधि बिसराय गयो मोरी रे । सुधि . .

33 दर्शन दो घनश्याम . . .

दर्शन दो घनश्याम, नाथ मोरी अँखियाँ प्यासी रे ।
मन मन्दिर मे ज्योति जगा दो, घट घट बासी रे ।

मन्दिर-मन्दिर मूरत तेरी, फिर भी न दीखे सूरत तेरी ।
युग बीते ना आई मिलन की पूरण मासी रे ॥ दर्शन दो घनश्याम. . .

द्वार दया का जब तू खोले,पंचम स्वर में गूंगा बोले ।
अंधा देखे लंगडा चल कर, पहुंचे काशी रे ॥ दर्शन दो घनश्याम. . .

पानी पीकर प्यास बुझाऊँ,नैनन को कैसे समझाऊँ ।
आँख मिचोली छोडो अब तो,मन के बासी रे ॥ दर्शन दो घनश्याम. . .

निर्बल के बल,धन निर्धन के, तुम रखवाले भक्त जनन के ।
तेरे भजन में सब सुख पाऊँ,और मिटे उदासी रे ॥ दर्शन दो घनश्याम. . .

नाम जपूँ पर तुझे न जानू फिर भी तुझको अपना मानू ।
तेरी दया का अन्त नहीं है, हे दुख नाशी रे ॥ दर्शन दो घनश्याम. . .

आज फैसला तेरे दर पर, तेरी जीत है, मेरी हार पर ।
हार-जीत है तेरी, मैं तो चरण उपासी रे ॥ दर्शन दो घनश्याम. . .

द्वार खडा कब से मतवाला, मांगे तुझसे प्यार तुम्हारा ।
नरसी की ये विनती सुन लो, भक्त विलासी रे ॥ दर्शन दो घनश्याम. . .

लाज न लुट जाय प्रभु मेरी, नाथ करो ना दया में देरी ।
तीनो लोक छोड के आओ, गगन निवासी रे ॥ दर्शन दो घनश्याम. . .

34 श्री राधे गोविन्दा . . .

श्री राधे गोविन्दा, मन भजले हरि का प्यारा नाम है ।
गोपाला हरि का प्यारा नाम है, नन्द लाला हरि का प्यारा नाम है ॥

जय नन्द लाला, जय गोपाला, जय नन्द लाला जय गोपाला ।
गोपाला हरि का प्यारा नाम है, नन्द लाला हरि का प्यारा नाम है ॥
श्री राधे गोविन्दा मन भजले हरि का प्यारा नाम है ।

मोर मुकट सिर गल बन माला केसर तिलक लगाये ।
वृन्दावन की कुन्ज गलिन में सबको नाच नचाये ॥
श्री राधे गोविन्दा मन भज ले हरि का प्यारा नाम है ।

जमुना किनारे धेनु चराये, माधव मदन मुरारी ।
मधुर मुरलिया जबहि बजाये हर ले सुध बुध सारी ॥
श्री राधे गोविन्दा मन भजले हरि का प्यारा नाम है ।

गिरधर नागर कहती मीरा, शामल शामल काया ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर भेद है किसने पाया ॥
श्री राधे गोविन्दा मन भजले हरि का प्यारा नाम है ।

गोपाला हरि का प्यारा नाम है नन्द लाला हरि का प्यारा नाम है ॥

35 श्री कृष्ण गोविन्द . . .

श्री कृष्ण गोविन्द हरे मुरारे, हे नाथ नारायण वासुदेवा ।
हे नाथ नारायण वासुदेवा, हे नाथ नारायण वासुदेवा ॥

गोविन्द दामोदर हरे मुरारे, हे नाथ नारायण वासुदेवा ।
वसुधैव भारे हरे मुरारे, हे नाथ नारायण वासुदेवा ॥

संसार सागर से तुम मुरारे, तारो हमे नाथ हे वासुदेवा ।
करुणा करो दीन बन्धू हमारे, हे नाथ नारायण वासुदेवा ॥

सुनता हूँ गज और गणिका उबारे, करुणा ने तेरी हे वासुदेवा ।
हम पर कृपा कब होगी मुरारे, हे नाथ नारायण वासुदेवा ॥

सुनता हूँ ज्ञानी तपके सहारे, करते तेरा ध्यान हे वासुदेवा ।
निर्मल हृदय से तुमको कन्हैया, गोपी पुकारे हे वासुदेवा ॥

पाया नहीं अन्त वेदों ने जिसका, सर्वत्र व्यापी श्री वासुदेवा ।
सुनता हूँ भक्ति विरह के सहारे, बनते हो तुम दास, हे वासुदेवा ॥

36 जै कृष्ण हरे . . .

जै कृष्ण हरे, जै कृष्ण हरे, दुखियों के संकट दूर करे।
जै, जै, जै, जै ,जै कृष्ण हरे ॥

जब चारों तरफ अंधियारा हो, आशा का दूर किनारा हो ।
जब कोई न खेवन हारा हो, फिर तू ही बेडा पार करे ॥ जै, जै, जै . . .

तू चाहे तो सब कुछ कर दे, विष को भी अमृत कर दे ।
पूरण कर दे सब की आशा, जो भी तेरा ध्यान धरे ॥ जै, जै, जै. . .

37 आना सुन्दर श्याम . . .

आना सुन्दर श्याम हमारे घर कीर्तन में। आना श्री भगवान हमारे, घर कीर्तन में॥
आप भी आना संग राधाजी को लाना, प्रेम से रास रचाना हमारे घर कीर्तन में
आना सुन्दर श्याम हमारे घर कीर्तन में॥
आप भी आना शिव शंकर जी को लाना, प्रेम से डमरु बजाना, हमारे घर कीर्तन में
आना सुन्दर श्याम हमारे घर कीर्तन में॥
आप भी आना संग नारद जी को लाना, प्रेम से वीणा बजाना हमारे घर कीर्तन में
आना सुन्दर श्याम हमारे घर कीर्तन में॥
आप भी आना संग ब्रह्मा जी को लाना, वेदों का पाठ पढाना, हमारे घर कीर्तन में
आना सुन्दर श्याम हमारे घर कीर्तन में॥

38 ब्रज में हरि . . .

ब्रज में हरि होली मचाई ।
इतते निकसी कुवरि राधिक, उतते कुवर कन्हाई ॥
हिल-मिल फाग परस्पर खेलयो, शोभा वरनी न जाई ।
नन्द घर बजत बधाई, अरे हाँ रे, ब्रज में होली मचाई॥
उडत अबीर गुलाल कुम्कुमा, रहयो सकल ब्रज छाई ।
रास विहार करत वृन्दावन, सूरदास चितलाई ॥
नन्द घर बजत बधाई, अरे हाँ रे, ब्रज में हरि होली मचाई॥

39 कन्हैया कन्हैया पुकारा . . .

कन्हैया कन्हैया पुकारा करेंगे, लताओ में ब्रज की गुजारा करेंगे ।
कहीं तो मिलेंगे वो बाँके बिहारी, उन्हीं के चरण चित लगाया करेंगे ॥
कन्हैया कन्हैया पुकारा करेंगे,
बना करके हृदय में हम प्रेम मन्दिर, वहीं उनको झूला झुलाया करेंगे ।
उन्हें हम बिठावेंगे आंखों में, दिल में, उनहीं से सदा लौ लगाया करेंगे ॥
कन्हैया कन्हैया पुकारा करेंगे,
जो रूठेंगे हमसे वो बाँके बिहारी, चरण पड उन्हें हम मनाया करेंगे ।
डोरी से हम बांध लेंगे, तो फिर वो कहां भाग जाया करेंगे ॥
उन्हें प्रेम कन्हैया कन्हैया पुकारा करेंगे,
कन्हैया कन्हैया पुकारा करेंगे,
उन्होंने छुडाये थे गज के वो बन्धन, वही मेरे संकट मिटाया करेंगे ।
उन्होंने नचाये थे ब्रह्माण्ड सारे, मगर अब उन्हें हम नचाया करेंगे ॥
कन्हैया कन्हैया पुकारा करेंगे,
भजेंगे जहाँ प्रेम से नन्द नन्दन, कन्हैया छबि को दिखाया करेंगे ।
कन्हैया कन्हैया पुकारा करेंगे, लताओं में ब्रज की गुजारा करेंगे ॥

40 मेरे तो गिरधर . . .

मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई। जाके सिर मोर मुकुट मेरो पति सोई॥

शंख,चक्र गदा पदम, कंठ माला सोही। भीक्त देख राजी हुई, जगति देख रोई॥

तात,मात,बंधु, सखा अपना नहीं कोई। छोड दूनी कुल की लाज, क्या करेगा कोई॥

अंसुवन जल सींच-सींच, प्रेम बेल बोई । संतन डिग बैठ-बैठ लोक लाज खोई॥

अब तो बेल फैल गई, आनन्द फल होई। दासि मीरा, लाल गिरधर तारो अब मोही॥

मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई। जाके सिर मोर मुकुट मेरो पति सोई॥

41 श्याम पिया मोरी . . .

श्याम पिया मोरी रंग दे चुनरिया। रंग दे चुनरिया . . . रंग दे चुनरिया
ऐसी रंग दे के रंग नाही छूटे, धोबिया धोये चाहे सारी उमरिया
श्याम पिया मोरी रंग दे चुनरिया

लाल ना रंगाऊँ मैँ, हरी ना रंगाऊँ, अपने ही रंग में रंग दे चुनरिया
श्याम पिया मोरी रंग दे चुनरिया

बिना रंगाये मैँ तो घर ना ही जाऊँगी, बीत जाये चाहे सारी उमरिया
श्याम पिया मोरी रंग दे चुनरिया

मीरा के प्रभु गिरधर नागर, प्रभु चरणन मे लागी नजरिया
श्याम पिया मोरी रंग दे चुनरिया

42 ऐसी लागी लगन...

ऐसी लागी लगन,मीरा हो गई मगन। वो तो गली-गली हरि गुण गाने लगी ॥ ऐसी..

महलों पली बन के जोगन चली। मीरा रानी दिवानी कहाने लगी ॥ ऐसी...

कोई रोके नहीं, कोई टोके नहीं । मीरा गोविन्द गोपाल गाने लगी ॥ ऐसी ...

बैठी सन्तों के संग,रंगी मोहन के रंग। मीरा प्रेमी प्रीतम को मनाने लगी।

वो तो गली-गली हरी गुण गाने लगी ॥ ऐसी लागी...

राणा ने विष दिया मानो अमृत पिया। मीरा सागर में सरिता समाने लगी ॥ ऐसी ..

दुख लाखों सहे, मुख से गोविन्द कहे । मीरा गोविन्द गोपाल गाने लगी ।

वो तो गली-गली हरि गुण गाने लगी ॥ ऐसी लागी लगन...

43 मैया मोरी मैं नहीं ...

मैया मोरी मै नहीं माखन खायो ।

भोर भई गैयन के पाछे, मधुबन मोहि पठायो ।
चार पहर वंशीवट भटक्यो, सांझ परे घर आयो ॥ मैया मोरी ...

मैं बालक बहियन को छोटो, छींको केहि बिधि पायो ।
ग्वाल बाल सब वैर परे हैं, बरबस मुख लपटायो ॥ मैया मोरी...

तू जननी मन की अति भोरी ,इनके कहे पतियायो ।
जिया तेरे कछु भेद उपजि है, जानि परायो जायो ॥ मैया मोरी...

यह लै अपनी लकुटि कमरिया, बहुतहि नाच नचायो ।
सूरदास तब बिहंसि यसोदा, ले उर कंठ लगायो ॥ मैया मोरी...

44 नटवर नागर...

नटवर नागर नन्दा, भजो रे मन गोविन्दा ॥
श्याम सुन्दर मुख चन्दा, भजो रे मन गोविन्दा ।
तू ही नटवर, तू ही नागर, तू ही बाल मुकुन्दा ॥ भजो रे...

सब देवन में कृष्ण बडे हैं, ज्यों तारों में चन्दा ।
सब सखियन में राधाजी बडी हैं, ज्यों नदियों में गंगा ॥ भजो रे...

ध्रव तारे, प्रहलाद उबारे,नरसिंह रुप धरन्ता ।
कालीदह में नाग जो नाथयो, फण-फण निरत करन्ता ॥ भजो रे...

वृन्दावन में रास रचायो, नाचत बाल मुकुन्दा ।
एक घडी नितहरि को भजले, छोडदे करना धंधा ॥ भजो रे...

बांके बिहारी के दरस से, कट जावे जन्म का फन्दा ।
सांवरी सूरत मेरे मन भाई, लख-लख आये अनन्दा ॥ भजो रे...

मीरा के प्रभू गिरधर नागर, काटो जन्म का फन्दा ।
भजो रे मन गोविन्दा, नटवर नागर नन्दा, भजो रे मन गोविन्दा ॥

45 खियाँ हरि दर्शन...

अखियाँ हरि दर्शन की प्यासी ।
देखन चाहयो कमल नैयन को, निशि दिन रहत उदासी ॥

केसर तिलक मोतियन की माला, वृन्दावन के बासी ।
नेह लगाये त्याग गये तृन सम,डारि गयो गल फांसी ॥ अखियाँ...

पात-पात में जिनकी लीला, भक्त हृदय के बासी ।
जिनके प्रेम फन्द में फंस कर, छुटे जन्म-जन्म की फांसी ॥ अखियाँ...

काहू के मन की कोई नहीं जानत,लोग करें मेरी हांसी ।
सूरदास प्रभु तुम्हरे दरस बिनु, लेहों करवट कासी ॥ अखियाँ...

46 मैं तो गिरधर के रंग . . .

मैं तो गिरधर के रंग राती ।
जिन के पिया परदेस बसत हैं, लिख-लिख भेजत पाती।
मेरे पिया मेरे घट में बिराजे, बात करूँ दिन राती ॥ मैं तो. . .

और सखी मद पी-पी माती, मैं बिन पिये ही माती ।
मैं रस पीऊँ प्रेम भक्ति को,छकी रहूँ दिन राती ॥ मैं तो . . .

सुरती निरती का दिवला संजोऊँ, मनसा की करलूं बाती ।
अगम घाणी से तेल कढाऊँ, बाल रही दिन राती ॥ मै तो . . .

झूठा सुहाग जगत का री सजनी,होय-होय मिट जासी ।
मैं तो हरि अविनाशी वरुंगी, जाहे काल नहीं खासी ॥ मैं तो. . .

पीहर रहूँ, ना सासरे,मै तो प्रभू से नैन लगाती ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, चरण रहूँ दिन राती ॥ मैं तो. . .

47 यशोमति मैया से . . .

यशोमति मैया से बोले नन्दलाला, राधा क्यो गोरी मै क्यों काला ।

बोली मुसकाती मेया ललन को बताया,काली अंधियारी आधी रात में तू आया ॥
लाडला कन्हैया मेरा हो . . लाडला कन्हैया मेरा काली कमली वाला।
इसी लिये काला ॥ यशोमति मैया . . .

बोली मुस्काती मैया सुन मेरे प्यारे, गोरी-गोरी राधिका के नैन कजरारे ।
काले नैयनो वाली ने हो . . काले नैयनो वाली ने ऐसा जादू डाला ॥
इसी लिये लाला ॥ यशोमति मैया . . .

इतने में राधा प्यरी आई इतराती, मैंने ना जादू डाला बोली बलखाती ।
लाडला कन्हया तेरा हो . . लाडला कन्हैया तेरा जग से निराला ॥
इसी लिये काला, इसी लिय काला ॥ यशोमति मैया . . .

48 करके स्वीकार प्रभो . . .

करके स्वीकार प्रभो, मेरा गीत अमर कर दो ।
बन जाओ मेरे मीत, ये प्रीति अमर कर दो ॥

इस महिमा के जग में, हैं लाखों यहाँ बन्धन।
थक हार गया हूँ मैं सह करके उत्पीडन ।
आया हूँ द्वार तेरे, मेरी जीत अमर कर दो ॥

मन रूपी वीणा के सब तारे टूट गये ।
जो आशा थी इनसे वो आशा छूट गई ।
झंकृत करके इनको, संगीत अमर कर दो ॥

जग ने छीना मुझसे, मुझे जो भी लगा प्यारा ।
सब जीते ही मुझ से, मैं हर दम ही हारा ।
दर्शन देकर प्रभू अब, मेरी दृष्टि अमर कर दो ॥
संगीत अमर कर दो, मेरा गीत अमर कर दो ।
करके स्वीकार प्रभो, मेरा गीत अमर कर दो ॥

49 शरण प्रभु की आओ

शरण प्रभु की आओ रे, यही समय है प्यारे ॥
आओ प्रभु गुण गाओ रे, यही समय है प्यारे ॥
उदय हुआ ओ३म् नाम का भनु, आओ दर्शन पाओ रे ॥ यही समय. . .
अमृत झरना झरता इससे, पी के अमर हो जाओ रे ॥ यही समय. . .
छल-कपट और द्वेष को त्यागो, सत्य में चित्त लगाओ रे ॥ यही समय. . .
हरि की भक्ति बिन नहीं मुक्ति, दृढ विश्वास जमाओ रे ॥ यही समय. . .
करलो नाम प्रभु का सुमिरन, अन्त को न पछताओ रे ॥ यही समय. . .
छोटे-बडे सब मिल कर खुशी से, गुण ईश्वर के गाओ रे ॥ यही समय. . .

50 भगवान मेरी नैया

भगवान मेरी नैया, उस पार लगा देना ।
अब तक तो निभाया है, आगे भी निभा देना ॥

दलबल के साथ, माया जो घेरे मुझे ।
तुम देखते न रहना, झट आके बचा लेना ॥

सम्भव है झंझटों में, मैं तुमको भूल जाऊँ ।
पर नाथ कहीं तुम भी, मुझको न भुला दना ॥

तुम देव-देव मैं तुछ पुजारी,तुम इष्टदेव मैं रहा उपासक ।
यह बात अगर सच है, तो सच करके दिखा देना ॥

भगवान मेरी नैया उस पार लगा देना ।
अब तक तो निभाया है, आगे भी निभा देना ॥

51 हरि बोल, हरि बोल . . .

हरि बोल, हरि बोल, हरि हरि बोल । मुकुन्द माधव गोविन्द बोल ॥

राम बोल, राम बोल, राम राम बोल । सीता समेत श्री रामचन्द्र बोल ॥

कृष्ण बोल, कृष्ण बोल, कृष्ण कृष्ण बोल । राधा समेत गोपाल कृष्ण बोल ॥

शंकर बोल, शंकर बोल,शंकर शंकर बोल । गौरी समेत शिव शंकर बोल ॥

नारायण, नारायण, नारायण बोल । लक्ष्मी समेत नारायण बोल ॥

विट्ठल बोल, विट्ठल बोल, विट्ठल विट्ठल बोल । रघुराई समेत श्री पांडुरंग बोल ॥

हरि बोल, हरि बोल, हरि हरि बोल । मुकुन्द माधव गोविन्द बोल ॥

52 मैली चादर . . .

मैली चादर ओढ के, कैसे द्वार तुम्हारे आऊँ ।
हे पावन परमेश्वर मेरे मन ही मन शरमाऊँ ॥

तूने मुझको जग में भेजा,दे कर निर्मल काया ।
आकर के संसार मे मैने, इस को दाग लगाया ॥
जन्म-जन्म की मैली चादर, अब कैसे दाग छुडाऊँ ।
मैली चादर ओढ के कैसे द्वार तुम्हारे आऊँ ॥

निर्मल वाणी पाकर तुझसे, नाम न तेरा गाया ।
नैन मूंद कर हे ! परमेश्वर कभी न तुझको ध्याया ॥
मन बीणा के तार जो टूटे, अब क्या गीत सुनाऊँ ।
मैली चादर ओढ के कैसे, द्वार तुम्हारे आऊँ ॥

इन पैरों से चल कर तेरे मन्दिर कभी न आया ।
जहाँ- जहाँ हो पुजा तेरी, कभी न शीश झुकाया ॥
हे हरि हर मैं हार के आया, अब क्या हार चढाऊँ ।
मैली चादर ओढ के कैसे, द्वार तुम्हारे आऊँ ॥

53 हरि भजन बिना . .

हरि भजन बिना सुख शान्ति नहीं । हरि नाम बिना आनन्द नहीं ॥ हरि भजन . . .

प्रेम भक्ति बिना उध्धार नहीं, गुरु सेवा बिना निर्वाण नहीं ।
जप ध्यान बिना संयोग नहीं, प्रभु दर्श बिना प्रज्ञान नहीं ॥ हरि भजन. . .

दया धर्म बिना सत्य कर्म नहीं,भगवान बिना कोई अपना नहीं ।
हरि नाम बिना परमार्थ नहीं, हरि भजन बिना सुख शान्ति नहीं ॥ हरि. . .

54 तेरे पूजन को भगवान . . .

तेरे पूजन को भगवान, बना मन मन्दिर आलिशान ॥

किसने जानी तेरे माया, किसने भेद तेरा है पाया ।
हारे ऋषी मुनी धर ध्यान, बना मन मन्दिर आलिशान ॥ तेरे पूजन. . .

किसने देखी तेरी सूरत, कौन बनाये तेरी मूरत ।
तू है निराकार भगवान, बना मन मन्दिर आलिशान ॥ तेरे पूजन. . .

यह संसार है तेरा मन्दिर, तू रमा है इसके अन्दर ।
करते नर-नारी सब ध्यान, बना मन मन्दिर आलिशान ॥ तेरे पूजन. . .

तू हर गुल मो तू बुलबुल में, तू हर शाख के हर पातन में ।
तू हर दिल में मूरति मान, बना मन मन्दिर आलिशान ॥ तेरे पूजन. . .

सागर तेरी शान बढावे, पर्वत तेरी शोभा गावे ।
तेरा रुप अनूप महान, बना मन मन्दिर आलिशान ॥ तेरे पूजन. . .

तूने राजा रंक बनाये, तूने भिक्षुक राज बिठाये ।
तेरी लीला ईश महान, बना मन मन्दिर आलिशान ॥ तेरे पूजन. . .

झूठे जग की झूठी माया, मूरख इसमें क्यों भरमाया ।
कर कुछ जीवन का कल्याण, बना मन मन्दिर आलिशान ॥

तेरे पूजन को भगवान बना मन मन्दिर आलिशान ॥

55 दुःख दूर कर हमारा...

दुःख दूर कर हमारा, संसार के रचैया ।
जल्दी से दो सहारा, मंझधार में है नैया ॥ दुःख दूर...

तुम बिन कोई हमारा, रक्षक नहीं यहां पर ।
ढूंढा जहान सारा, तुमसा नहीं रखैया ॥ दुःख दूर...

दुनियाँ में खूब देखा, आंखें पसार करके ।
साथी नहीं हमारा, माँ, बाप और भैया ॥ दुःख दूर...

सुख के सभी हैं साथी, दुनिया के मित्र सारे ।
तेरा ही नाम प्यारा, दुःख दर्द से बचावे ॥ दुःख दूर...

दुनिया में फंस के हमको, हासिल हुआ न कुछ भी ।
तेरे बिना हमारा, कोई नहीं सुनैया ॥ दुःख दूर...

चारो तरफ से हम पर, गम की घटा है छाई ।
सुख का करो उजाला, प्रकाश के करैया ॥ दुःख दूर...

अच्छा बुरा हो जैसा, राजी में राम रहता ।
चेरा है यह तुम्हारा, सुध लेवो सुध लिवैया ॥ दुःख दूर...

56 खेल तुम्हारे न्यारे . . .

खेल तुम्हारे न्यारे प्रभु जी, खेल तुम्हारे न्यारे ।

कौन समझ सकता है लीला, हम मानव मति मारे ॥ प्रभु जी. . .

सुख पाकर हम भूला करते, नाम तुम्हारे प्यारे ।

लेकिन दुःख में रो-रो कहते,प्रभु तुम ही रखवारे ॥ प्रभु जी. . .

दया करो हे दाता हम पर, पग-पग पर अंगारे ।

बुझे हुये दीपक की बाती, तुम बिन कौन संवारे ॥ प्रभु जी. . .

57 आनन्द दाता . . .

आनन्द दाता आनन्द दीजे, आनन्द, आनन्द, आनन्द दीजे ।

आनन्द सागर अपरम्पारा, कोई नहीं है तुमसे प्यारा ॥ आनन्द दाता. . .

जहाँ देखे वहाँ आनन्द पाये, आनन्द रूपी हरि गुण गाये । आनन्द दाता . . .

हम हैं भिखारी तेरे दर के, भिक्षा में आनन्द ही दीजे ।

आनन्द दाता आनन्द दीजे. . .

58 माटी कहे कुम्हार से . . .

माटी कहे कुम्हार से, तू क्या रोन्धे मोहे ।
इक दिन ऐसा आयेगा, मैं रोन्धूंगी तोहे ॥

कबीरा तेरी झींपडी, गल कटियन के पास ।
जो करेंगे सो भरेंगे, तू क्यों भया उदास ॥

मो को कहाँ ढूँडे रे बन्दे, मो तो तेरे पास ।
न मन्दिर में, न मस्जिद में, न काबे कैलाश ॥

राम नाम की लूट है, लूट सके तो लूट ।
अन्त काल पछतायेगा, जब प्राण जायेंगे छूट ॥

लाली मेरे लाल की, जित देखूँ तित लाल ।
लाली देखन मैं गई, मैं भी हो गई लाल ॥

पत्ता टूटा डाल से, ले गई पवन उडाए ।
अब के बिछडे न मिलें, दूर पडेंगे जाए ॥

गुरु गोविन्द दोनो खडे, काके लागूँ पाए ।
बलिहारी गुरु आप की, गोविन्द दियो मिलाए ॥

पोथी पढ-पढ जग मुआ,पंडित भया न कोय ।
ढाई अक्षर प्रेम का, पढे सो पंडित होय ॥

दुःख में सुमिरन सब करें, सुख में करे न कोय ।
जो सुख में सुमिरन करे, तो दुःख काहे को होय ॥

बडा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड खजूर ।
पंछी को छाया नहीं, फल लागे अति दूर ॥

59 विश्वपति के ध्यान मे. . . .

विश्वपति के ध्यान में, जिस ने लगाई हो लगन ।
क्यों न हो उसको शान्ति,क्यों न हो उसका मन मगन ॥

काम, क्रोध, लोभ, मोह शत्रु हैं सब महा बली ।
इनके हनन के वास्ते जितना हो तुझसे कर यत्न ॥

ऐसा बना ले स्वभाव को चित्त की शान्ति से तू ।
पैदा न हो ईर्षा की आंच दिल में करे कहीं जलन ॥

मित्रा सबसे मनमें रख त्याग के बैर भाव को ।
छोड दे टेढी चालको ठीक कर तू अपना चलन ॥

जिससे अधिक न है कोई जिसने रचा है यह जगत ।
उसका ही रख तू आश्रय उसकीही तू पकड शरण ॥

छोड के राग-द्वेष को मन में तू उसका ध्यान धर ।
तुझ पै दयालु होंवेंगे निश्चय ही यह परमात्मन् ॥

आप दया स्वरूप हैं आप ही का है आश्रय ।
कृपा की दृष्टि कीजिय मुझ पै हो जब समय कठिन ॥

मन में मेरे हो चाँदना मोक्ष का रास्ता मिले ।
मार के मन को केवला इन्द्रियों को करे दमन ॥

विश्वपति के ध्यान में जिस ने लगाई हो लगन ।
क्यों न हो उसको शान्ति क्यों न हो उसका मन मगन ॥

60 यह जन्म तुझे अनमोल मिला

मेरा मुझ में कुछ नहीं, जो कुछ है सो तोर ।
तेरा तुझ को सौंपते, क्या लागे है मोर ॥

यह जन्म तुझे अनमोल मिला, चाहे जो इससे कमा बाबा ।
कुछ धीन कमा कुछ दुनिया कमा, कुछ हरि के हेत लगा बाबा ॥ यह जन्म..

जब हाथ पसारे जायेगा,बिन शोक कुछ हाथ न आयेगा ।
सर पटकेगा पछतायेगा, अब ही से राम मना बाबा ॥ यह जन्म...

क्यों पाप कर्म खेप भरी, तू हलका सिर भारी गठडी ।
झट पटक तू सिर से विषय गठडी, और हल्के-हल्के जा बाबा ॥ यह जन्म...

यहाँ दो दिन को तू आया है, किस विरदे वजह पर छाया है ।
यह भरम जाल सब माया है,इस से न दिल को लगा बाबा ॥ यह जन्म...

जो देता है वो लेता है, जो खोता वो पाता है ।
यहाँ नकदम नकदी सौदा है, जो आया है वो गया बाबा ॥ यह जन्म...

शहनशाह राम दुहाई है, बिन हरि न कोई सहाई है ।
तो चिन्ता कैसी पाली है, सब यहीं रह जायगा धरा बाबा ॥ यह जन्म...

धुनः मनुवा भज ले राम राम, मनुवा भज ले राम राम ।
राम राम राम राम राम, मनुवा भज ले राम राम ॥

61 सुखी बसे संसार...

सुखी बसे संसार सब दुःखिया रहे न कोय।
यह अभिलाषा हम सबकी भगवन् पूरी होय ॥

विद्या बुद्धि तेज बल सबके भीतर होय ।
दूध पूत धन धान्य से वंचित रहे न कोय ॥

आप की भक्ति प्रेम से मन होवे भरपूर ।
राग-द्वेष से चित्त मेरा कोसों भागे दूर ॥

मिले भरोसा आप का हमें सदा जगदीश ।
आशा तेरे धाम की बनी रहे मम ईश ॥

पाप से हमे वचाइय करिए दया दयाल ।
अपना भक्त बनाइके हमको करो निहाल ॥

दिल में दया उदारता मन में प्रेम अपार ।
धैर्य हृदय में वीरता सब को दो करतार ॥

सर्वे भवन्तु सुखिनाः सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःख भावभवेत् ॥

62 सच्चा तू करतार . . .

सच्चा तू करतार है, सब का पालन हार है ।
सब को तेरा आसरा, सुखों का भन्डार है ॥

नदियाँ नाले पर्वत सारे, तेरी याद दिलाते है, तेरी याद दिलाते ।
ऋषि मुनि और योगी सारे, तेरे ही गुण गाते है, तेरे ही गुण गाते ॥
सच्चा तू करतार है, सब का . . .

बादल गर्जे बिजली चमके, छम-छम वर्षा आती है, छम-छम वर्षा आती ।
मीठी वाणी कोयल बोले, यही राग सुनाती है, यही राग सुनाती ॥
सच्चा तू करतार है, सब का. . .

सत चित्त आनन्द प्रभु को, वेदों ने बतलाया है, वेदो ने बतलाया ।
बिन कर कर्म करे विधि नाना रामायण में आया है, रामायण मो आया ॥
सच्चा तू करतार है, सब का. . .

शुभ कर्मों से मानव का यह सुंदर चोला पाया है, सुंदर चोला पाया ।
विषय विकारों में फँस करके इस को दाग लगाया, इस को दाग लगाया ॥
सच्चा तू करतार है, सब का. . .

नन्द लाल कहे श्रद्धा से चरणो में शीश झुकाते है ।
बल बुद्धि और विद्या का दान आप से चाहते है, दान आप से चाहते ॥
सच्चा तू करतार है, सब का. . .

63 खेल तुम्हारे न्यारे . . .

खेल तुम्हारे न्यारे प्रभु जी, खेल तुम्हारे न्यारे ।

कौन समझ सकता है लीला, हम मानव मति मारे ॥ खेल. . .

सुख पाकर हम भूला करते, नाम तुम्हारा प्यारा, प्यारा ।

लेकिन दुःख में रो-रो कहते, प्रभु तुम ही रखवारे ॥ खेल. . .

दया करो हे दाता हम पर, पग-पग पर अंगारे ।

बुझे हुए दीपक की बाती, तुम बिन कौन सँवारे ॥ खेल. . .

64 प्रभु बिन कौन हरे ः

प्रभु बिन कौन हरे दुःख मेरे, आशा तृष्णा बहुत सतावे ॥

मन पीडा से जी घबरावे, प्रभु बिन कौन हरे दुःख मेरे ॥

तेरी माया तेरी काया,काम क्रोध हठ लोभ कमाया ॥ प्रभु बिन. . .

राह दिखा दे कैसे करूँ मैं, कैसे करूँ इस जग से किनारा ॥ प्रभु बिन. . .

राह तुम्हारी बहुत कठिन है, थक न जाऊँ दे-दे सहारा । प्रभु बिन. . .

65 हम सब मिलके . . .

हम सब मिलके आये दाता तेरे दरबार ।
भर दे झोली सबकी तेरे पूर्ण भँडार ॥

आवे जब सँकटकाल निर्मल करदे तत्काल ।
हम सब मस्तक झुकाके करके तेरा ख्याल ।
तेरे दर पे आके बैठे सारा परिवार ।
भर दे झोली सबकी तेरे पूर्ण भँडार ॥

लेके दिल मैं फरियाद करके हम तुमको याद ।
जब हों मुश्किल घडियाँ माँगें तुमसे इमदाद ।
सबसे बढके ऊँचा जग मैं तेरा आधार ।
भरदे झोली सबकी तेरे पूर्ण भँडार ॥

चाहे दिन हो विपरीत, होवे तुमसे ही प्रीत ।
सच्ची श्रद्धा से गावैं तेरी भक्ति के गीत ॥
होवे सब का मैया तेरे चरणो मैं प्यार ।
भरदे झोली सबकी तेरे पूर्ण भँडार ॥

तू है सब जगकी माली करती सबकी रखवाली ।
हम हैं रँग-रँग के पौदे, तू है उन सबकी माली ।
अद्भुत बगीचा तेरा, है सुन्दर सँसार ।
भरदे झोली सबकी तेरे पूर्ण भँडार ॥

66 शरण अपनी में रख लीजो . . .

शरण अपनी में रख लीजो, दयामय दास हूँ तेरा ।
तुझे तज कर कहाँ जाऊँ, हितु कोन और है मेरा ॥
भटकता हूँ मैं मुद्दत से, नहीं विश्राम पाता हूँ ।
दया की दृष्टि से देखो, नहीं तो डुबता बेडा ॥ शरण अपनी. . .
सताया राग द्वेषों का, तपाया तीन तापो का ।
दुखाया जन्म मृत्यु का, हुआ तंग हाल है मेरा ॥ शरण अपनी. . .
दुखो को मेटने वाला,तुम्हारा नाम सुनकर मैं ।
शरण में आ गिरा अब तो, भरोसा नाथ है तेरा ॥ शरन अपनी. . .
क्षमा अपराध कर मेरे,फकत अब आश है तेरी ।
दया अब भक्त पर करके, बना लो नाथ निज चेरा ॥ शरण अपनी. . .

67 प्रभु जी मेरे अवगुण. . .

प्रभु जी मेरे अवगुण चित्त न धरो ।
समदरसी प्रभु नाम तिहारो, अपने पनहि करो ॥ प्रभु जी. . .

इक लोहा पूजा में राखत, इक घर बधिक करो ।
यह दुविधा पारस नहीं जानत, कंचन करत खरो ॥ प्रभु जी. . .

इक नदिया इक नाली कहावत, मैला नीर भरो ।
जब मिलिकै दोऊ एक वरन भए, सुरसरि नाम परयो ॥ प्रभु जी. . .

इक जीव इक ब्रह्म कहावत, सूर स्याम झगरयो ।
अब की बेर मोहे पार उतारो, नहिं पन जात टरयो ॥ प्रभु जी. . .

68 वह शक्ति हमें दो ...

वह शक्ति हमें दो दया निधे, कर्तव्य मार्ग पर डट जावें ।
कर सेवा, कर उपकार में हम, निज जीवन सफल बना जावें ॥ वह शक्ति...

हम दीन,दुखी,निर्बल,विकलों, के सेवक बन सन्ताप हरें ।
जो हैं अटके भूले भटके, उनको तारें हम तर जावें ॥ वह शक्ति...

छल,दम्भ,द्वेष,पाखण्ड, झूठ, अन्याय से निशि दिन दूर रहें ।
जीवन हो शुध्द सरल अपना, शुचि प्रेम सुधा रस बरसाए ॥ वह शक्ति...

निज आन-मान-मर्यादा का, प्रभु ध्यान रहे अभिमान रहे ।
जिस देश जाति में जन्म लिया, बलिदान उसी पर हो जावें ॥ वह शक्ति...

69 ओम् है जीवन हमारा ...

ओम् है जीवन हमारा, ओम् प्राणधार है ।
ओम् है सब का विधाता, ओम् पालनहार है ॥

ओम् है दुख का विनाशक, सर्वानन्द है ।
ओम् है बल-तेज-धारी, ओम् करुणानन्द है ॥ ओम् ...

ओम् सबका पूज्य है, हम ओम् का पूजन करें ।
ओम् के इस ज्ञाण से हम शुद्ध अपना मन करें ॥ ओम् ...

ओम् के गुरुमन्त्र जपने से , रहेगा शुद्ध मन ।
बुद्धि दिन पर दिन बढेगी, धर्म में होगी लगन ॥ ओम् ...

ओम् के जप से हमारा ज्ञाण बढता जायेगा ।
अन्त में ये ओम् हमको चोटी तक पहुँचायेगा ॥
ओम् है जीवन हमारा ओम् प्राणाधार है ॥

70 अब सौंप दिया इस जीवन का . . .

अब सौंप दिया इस जीवन का सब भार तुम्हारे हाथों मे, सब भार तुम्हारे हाथों मे ।
है जीत तुम्हारे हथों मे, और हार तुम्हारे हाथों मे, और हार तुम्हारे हाथों मे ॥

मेरा निश्चय बस एक यही, इक बार तुम्हे पा जाऊँ मै ।
अर्पण कर दूँ दुनिया भर का, सब प्यार तुम्हारे हाथों में, सब प्यार तुम्हारे हाथों में ॥

यदि मानुष का मुझे जन्म मिले, तो तव चरणो का पुजारी बनूँ ।
इस पूजक की इक-इक रग का, हो तार तुम्हारे हाथों मे, हो तार तुम्हारे हाथों मे ॥

जब-जब संसार का बन्दी बनु, दरबार में तेरे आऊँ मै
हो मेरे कर्मो का निर्णय, भगवान तुम्हारे हाथों मे, भगवान तुम्हारे हाथों मे ॥

कर्मक्षेत्र में जब मैं चलूँ, निष्काम भाव से काम करूँ ।
फिर अन्त समय में प्राण तजूँ, निराकार तुम्हारे हाथों मे, निराकार तुम्हारे हाथों मे ॥

मैं जग में रहूँ तो ऐसे रहूँ , ज्यों जल मे कमल का फूल रहे ।
इस पार तुम्हारे हाथों में, उस पार तम्हारे हाथों मे, उस पार तम्हारे हाथों मे ॥

मुझमे तुझमे बस भेद यही, मैं नर हूँ तुम नारायण हो ।
मै हूँ संसार के हाथों में, संसार तुम्हारे हाथों मे, संसार तुम्हारे हाथों मे ॥
अब सौंप दिया इस जीवन का सब भार तुम्हारे हाथों मे. . .

71 जय जय शंकर ...

जय जय शंकर जय अभयंकर । पार्वति शंकर शम्भो शंकर ॥ जय जय ...

सृष्टि स्थिलिलय करुणा कारक । मृत्युन्जय गणनायक नायक ॥

उमा पते शिव शंकर शंकर । गंगाधर अभयंकर शंकर ॥

जय गिरिजापति शंकर शंकर ।शम्भों शंकर गौरी शंकर ॥

जय जय शंकर जय अभयंकर ।पार्वति शंकर शम्भो शंकर ॥ जय जय ...

72 शम्भो महादेवा ...

शम्भो महादेवा, शिव शम्भो महादेवा ।

गंगाधरा हर गंगाधरा हर, गौरीधरा शंकरा.. हर गौरीधरा शंकरा ॥

हर हर हर शम्भो,शिव शिव शिव शम्भो ।हर भोलेनाथ शम्भो, हर गौरीनाथ शम्भो ॥

जय शिव शंकर,नमामि शंकर । जय शिव शंकर, नमामि शंकर, शिव शंकर शम्भो ॥

जय गिरिजापति,भवानि शंकर । जय गिरिजापति नमामि शंकर,शिव शंकर शम्भो ॥

हर ओ३म् तत्सत् नम : शिवाय ।हर हर शम्भो नम : शिवाय ॥

भवानी शंकर नम : शिवाय ।भोला महेश्बर नम : शिवाय ॥

हर हर शम्भो नम : शिवाय ।हर हर शम्भो नम : शिवाय ॥

73 ॐ नम : शिवाय ...

ॐ नम : शिवाय, ॐ नम : शिवाय ।बोलो बोलो सब मिल बोलो ॐ नम : शिवाय ॥

ॐ नम : शिवाय, ॐनम : शिवाय ।

बोलो बोलो सब मिल बोलो ॐ नम : शिवाय ॥

जूठ जटा मे गंगा धारी, त्रिशूल धारी डमरू बजाए ।

डम डम डम डम डमरु बजाये, गूँज उठा ॐ नम : शिवाय ॥

ॐ नम : शिवाय ॐ नम : शिवाय । ॐ नम : शिवाय ॐ नम : शिवाय ॥

शिवाय ॐ नम : शिवाय ॥

74 आज कैलाश पर ...

आज कैलाश पर बाज रहे डमरु, नाच रहे शंकर बांध पग घुंघरु ॥

ब्रह्मा भी आये, विष्णु भी आये, विष्णु के संग में नारद भी आये ।
नारद के हाथ में बाज रही वीणा, नाच रहे शंकर बाज रहे घुंघरु ॥

राम भी आये ,सीता जी भी आई, राम के संग में लक्ष्मण भी आये ।
लक्ष्मण के पैरों में बाज रहे घुंघरु, नाच रहे शंकर बांध पग घुंघरु ॥

कृष्ण भी आये, राधा जी भी आई, राधा के संग में गुपियाँ भी आई ।
गोपियों के पैरों में बाज रहे घुंघरु, नाच रहे शंकर बांध पग घुंघरु ॥

ग्वाले भी आये, गइयां भी आई, गइयों के संग में बछडे भी आये ।
बछडो के पैरों में बाज रहे घुंघरु, नाच रहे शंकर बांध पग घुंघरु ॥

आज कैलाश पर बाज रहे डमरु, नाच रहे शंकर बांध पग घुंघरु ॥

75 चन्द्रशेखराय नमः ओम्

शिवाय परमेश्वराय चन्द्रशेखराय नमः ओम् ।
भवाय भव भय हराय, शिव ताण्डवाय नमः ओम् ॥

शिव ताण्डवाय नमः ओम्, चन्द्रशेखराय नमः ओम् ।
शशि शेखराय नमः ओ३म्, शिव ताण्डवाय नमः ओम् ॥

नमः ओम्, नमः ओम्, नमः ओ३म् ,नमः ओ३म्, नमःओम् ।
नमः ओम्, नमः ओम्, नमः ओम्, नमः ओम्, नमः ओम् ॥

शम्भो पुरारे शंकर पुरारे, शूल धर फणिवर शंकर पुरारे ॥

76 जय जय शंकर . . .

जय जय शंकर, जय अभयंकर ।
पार्वति शंकर शम्भो शंकर ॥

सृष्टि स्थिल्लिय करुणा कारक ।
मृत्युन्जय गणनायक नायक ॥

उमा पते शिव शंकर शंकर ।
गंगाधर अभयंकर शंकर ॥

जय गिरिजापति शंकर शंकर ।
शम्भो शंकर गौरी शंकर ॥

77 शिव भोला भण्डारी साधो . . .

शिव भोला भण्डारी साधो, शिव भोला भण्डारी ।

भस्मासुर ने करी तपस्या, वर दीनो त्रिपुरारी रे ॥

जिसके सिर पर हाथ लगावे, भस्म हो जाये नर-नारी रे ।

ओंम नमो शिवाया, ओम नमो शिवाया, ओम नमो शिवाया . . .

शिव के सिर पर हाथ धरण की, मन में दुष्ट विचारी रे ।

भागे फिरे चहुँ दिसा शंकर, लगा दैत्य डर भारी रे ॥ ओम नमो. . .

गिरिजा रूप धर हरि बोले, बात असुर से प्यारी रे ।

जो तू मुझको नाच दिखावे, होंहूं नारी तुम्हारी रे ॥ ओम नमो. . .

नाच करत अपने सिर कर धर, भस्म भयो मति मारी रे ।

बह्मानन्द देत जोही मागें, शिव भगतन हितकारी रे ॥

शिव भोला भण्डारी साधो, शिव भोला भण्डारी ।

ओम नमो. . .

शंभो पुरारे, शंकर पुरारे, शूलधर फणिवर शंकर पुरारे ॥

78 तूने मुझे बुलाया ...

तूने मुझे बुलाया शेराँ वालिये, मैं आया मैं आया शेराँ वालिये ।

ओ जोताँ वालिये, पहाडाँ वालिये, ओ मेहराँ वालिये ॥ तूने मुझे...

सारा जग है इक बंजारा, सबकी मंजिल तेरा द्वारा ।

ऊँचे पर्वत लम्बा रस्ता (२), पर मैं रह न पाया शेराँ वालिये ॥ मै आया...

कौन है राजा कौन भिखारी, एक बराबर सारे तेरे पुजारी ।

तूने सबको दर्शन देके (२), अपने गले लगाया शेराँ वालिये ॥ मैं आया

सूने मन में जल गई बाती, तेरे पथ पे मिल गये साथी ।

मुह खोलूं क्या तुमसे मँागूं (२), बिन मांगे सब पाया शेराँ वालिये ॥ मै आया...

प्रेम से बोलो जय माता दी, सारे बोलो जय माता दी ।

आते बोलो जय माता दी, जाते बोलो जय माता दी ॥

माँ कष्ट निवारे जय माता दी, माँ पार उतारे जय माता दी ।

मेरी माँ भोली जय माता दी,ओ भर दे झोली जय माता दी ॥

ओ दे दे दर्शन जय माता दी, जय माता दी जय माता दी ॥

79 जय जग दम्बे माँ . . .

जग दम्बे . . . , जय जग दम्बे माँ, जय जग दम्बे माँ ।

गौरव शाली वैभव शाली, तुमको करुँ प्रणाम, तुमको करुँ प्रणाम ।

जग दम्बे माँ . . . , जय जग दम्बे माँ, जय जग दम्बे माँ ॥

मुझे बचाओ पीडाओ से वर्ध हस्त हैं तेरे ।

तेरे मन्दिर आते आते पाव थके न मेरे ।

तूने माता सदा बनाये मेरे बिगडे काम .. ।

जग दम्बे . . , जय जग दम्बे माँ, जय जग दम्बे माँ ॥

तेरी महिमा मैँ क्या गाऊँ सारी दुनिया जाने ।

उसको विपदा कभी न घेरे जो कोई तुझको माने ।

तेरे तो चरणो मेँ देखे मैने चारो धाम ।

जग दम्बे . . . , जय जग दम्बे मैँ, जय जग दम्बे मैँ ॥

80 इतना तो करना . . .

इतना तो करना स्वामी, जब प्राण तनसे निकलें ।
गोविन्द नाम लेकर, फिर प्राण तनसे निकलें ॥ इतना तो करना . . .

श्री गंगाजी का तट हो, यमुना का वंशी-बट हो ।
मेरा सांवरा निकट हो, जब प्राण तन से निकले ॥ इतना तो करना . . .

श्री वृन्दावन का थल हो, मेरे मुख में तुलसी दल हो ।
विष्णु-चरण का जल हो, जब प्राण तन से निकलें ॥ इतना तो करना . . .

सन्मुख सांवरा खडा हो, मुरली का स्वर भरा हो ।
तिरछा चरण धरा हो, जब प्राण तन से निकलें ॥ इतना तो करना . . .

सिर पे सुहाना मुकट हो, मुखडे पे काली लट हो ।
यही ध्यान मेरे घट हो, जब प्राण तन से निकलें ॥ इतना तो करना . . .

केसर तिलक हो आला, मुख चन्द्र-सा उजाला ।
डालूँ गले में माला, जब प्राण तन से निकलें ॥ इतना तो करना . . .

पीताम्बरी कसी हो, होठों पे कुछ हंसी हो ।
छवि यही मन में बसी हो, जब प्राण तन से निकलें ॥ इतना तो करना . . .

पग धो तृष्णा मिटाऊँ, तुलसी का पत्र पाऊँ ।
सिर चरण-रज लगाऊँ, जब प्राण तन दे निकलें ॥ इतना तो करना . . .

81 उठ जाग मुसाफिर

उठ जाग मुसाफिर भोर भई,अब रैन कहाँ जो सोवत है ।
जो जागत है, सो पावत है, जो सोवत है,सो खोवत है ॥
टुक नींद से अंखियाँ खोल जरा, और अपने ईश से ध्यान लगा ।
यह प्रीति करन की रीति नहीं, प्रभु जागत है तू सोवत है ॥ उठ जाग...

जो कल करना सो अज करले, जो अज करना सो अब करले ।
जब चिडियों ने चुग खेत लिया, फिर पछताये क्या होवत है ॥ उठ जाग...

नादान भुगत करनी अपनी,इस माया जाल में चैन कहाँ ।
जब पाप की गठरी सीस धरी, फिर सीस पकड क्यों रोवत है ॥
उठ जाग मुसाफिर भोर भई, अब रैन कहाँ जो सोवत है ।
जो जागत है सो पावत है, जो सोवत है सो रोवत है ॥

82 प्रभु बिन कौन ...

प्रभु बिन कौन हरे दुःख मेरे ॥

आशा तृष्णा बहुत सतावे, मन पीडा से जी घबरावे । प्रभु बिन ..

तेरी माया, तेरी काया,काम, क्रोध, हठ लोभ कमाया ।प्रभु बिन ..

राह दिखा दे कैसे करुँ मैं, कैसे करुँ मैं जग से किनारा । प्रभु बिन ..

राह तुम्हारी बहुत कठिन है, थक न जाऊँ दे-दे सहारा ।प्रभु बिन ..

83 खेल तुम्हारे न्यारे . . .

खेल तुम्हारे न्यारे प्रभु जी, खेल तुम्हारे न्यारे ।

कौन समझ सकता है लीला, हम मानव मति मारे ॥ प्रभु जी. . .

सुख पाकर हम भूला करते, नाम तुम्हारे प्यारे ।

लेकिन दुःख में रो-रो कहते,प्रभु तुम ही रखवारे ॥ प्रभु जी. . .

दया करो हे दाता हम पर, पग-पग पर अंगारे ।

बुझे हुये दीपक की बाती, तुम बिन कौन संवारे ॥ प्रभु जी. . .

84 आनन्द दाता . . .

आनन्द दाता आनन्द दीजे, आनन्द, आनन्द, आनन्द दीजे ।

आनन्द सागर अपरम्पारा, कोई नहीं है तुमसे प्यारा ॥ आनन्द दाता. . .

जहाँ देखे वहाँ आनन्द पाये, आनन्द रूपी हरि गुण गाये । आनन्द दाता . . .

हम हैं भिखारी तेरे दर के, भिक्षा में आनन्द ही दीजे ।

आनन्द दाता आनन्द दीजे. . .

85 माटी कहे कुम्हार से . . .

माटी कहे कुम्हार से, तू क्या रोन्धे मोहे ।
इक दिन ऐसा आयेगा, मैं रोन्धूंगी तोहे ॥

कबीरा तेरी झींपडी, गल कटियन के पास ।
जो करेंगे सो भरेंगे, तू क्यों भया उदास ॥

मो को कहाँ ढूँडे रे बन्दे, मो तो तेरे पास ।
न मन्दिर में, न मस्जिद में, न काबे कैलाश ॥

राम नाम की लूट है, लूट सके तो लूट ।
अन्त काल पछतायेगा, जब प्राण जायेंगे छूट ॥

लाली मेरे लाल की, जित देखूँ तित लाल ।
लाली देखन मैं गई, मैं भी हो गई लाल ॥

पत्ता टूटा डाल से, ले गई पवन उडाए ।
अब के बिछडे न मिलें, दूर पडेंगे जाए ॥

गुरु गोविन्द दोनो खडे, काके लागूँ पाए ।
बलिहारी गुरु आप की, गोविन्द दियो मिलाए ॥

पोथी पढ-पढ जग मुआ,पंडित भया न कोय ।
ढाई अक्षर प्रेम का, पढे सो पंडित होय ॥

दुःख में सुमिरन सब करें, सुख में करे न कोय ।
जो सुख में सुमिरन करे, तो दुःख काहे को होय ॥

बडा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड खजूर ।
पंछी को छाया नहीं, फल लागे अति दूर ॥

86 हे नटवर...

हे नटवर निराली है लीला तुम्हारी। समझ कौन सकता है महिमा तुमारी ॥
जिसे जैसा चाहो बनाकर दिखादो। सर्व श्रृष्टी तो है ही नटशाला तुम्हारी ॥
हे नटवर निराली है लीला तुम्हारी ॥

भिखारी है कोई तो है कोई राजा । नचाती नटों को है माया तुम्हारी।
हे नटवर निराली है लीला तुम्हारी ॥

नटों में कभी तुम जो आते हो नायक। तो ले आती है तुमको इच्छा तुम्हारी ।
हे नटवर निराली है लीला तुम्हारी ॥

जो हैं प्रेमी दर्शक वो यह चाहते हैं । रहे हृदय में प्रेम प्रतिमा तुम्हारी ।
हे नटवर निराली है लीला तुम्हारी ॥

87 तुम बिन कौन ...

तुम बिन कौन खबर ले, गोवर्धन गिरधारी ।
क्रीट मुकुट पीताम्बर सोहे, कुण्डल की छबि न्यारी ॥

तन-मन-धन सब तुम पै वारुँ, राखो लाज हमारी ।
इन नयनों में तुम्हीं बसे हो, चरण कमल बलिहारी ॥

भिलनी के बेर बसे मन माहिं, स्वाद लिया था भारी ।
कर दिये धनवान सुदामा, तुमने गणिका तारी ॥

गौतम ऋषि की नारी अहिल्या, रजसे स्वर्ग सिधारी ।
मीरा के प्रभू गिरधर नागर, जन्म-जन्म मैं दासी तिहारी ॥

88 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

गोविन्दं गोकुलानन्दं गोपालं गोपी वल्लभं,
गोवर्धन धरं वीरं , तं वन्दे गोमती प्रियं ॐ नमो..

नारायणं निराकारं नरवीरं नरोत्तमं
नरसिहं नागनाथं च, तं वन्दे नरकान्तकं ॐ नमो..

पीताम्बरं पद्मनाभं पद्माक्षं पुरुषोत्तमं
पवित्रं परमानन्दं, तं वन्दे परमेश्वरं ॐ नमो..

राघवं रामचन्द्रं च रावणारिं रमापतिं
राजीव लोचनं रामं तं वन्दे रघुनन्दनं ॐ नमो..

वामनं विश्वरूपं च वासुदेवं च विट्ठलं
विश्वेश्वरं विभुं व्यासं तं वन्दे वेद वल्लभं ॐ नमो..

दामोदरं दिव्य सिंहं दयालुं दीन नायकं
दत्यारिं देव देवेशं तं वन्दे देवकी सुतं ॐ नमो..

मुरारिं माधवं मत्स्यं मुकुन्दं मुष्टि मर्दनम्
मुञ्जकेशं महा बहुं तं वन्दे मधुसूदनं ॐ नमो..

केशवं कमला कान्तं कामेशं कौस्तुभ प्रियं
कौ मोदकि धरं कृष्णं तं वन्दे कौरवान्तकं ॐ नमो..

भूधरं भुवनानन्दं भूतेषं भूतनायकं
भावनैकं भुजङ्गेशं तं वन्दे भव नाशनं ॐ नमो..

जनार्दनं जगन्नाथं जगपोष विनाशकं
जामदग्नं वरं ज्योतिं तं वन्दे जलशायिनं ॐ नमो..

चतुर्भुजं चिदानन्दं चाणूरं मल्ल मर्दनं
चरा चरगतं देवं तं वन्दे चक्रपाणिनं ॐ नमो..

श्रीयः परम् शिवं नाथं श्रीधरं श्री वर प्रदं
श्री वत्सल धरम् सौम्यं तं वन्दे श्री सुरेश्वरं ॐ नमो..

योगीश्वरं यज्ञ पतिं यशोदा नन्द दायकं
यमुना जल कल्लोलिं तं वन्दे यदु नायकं ॐ नमो..

शालिग्रामं शिला शुद्धं शञ्ख चक्रोप शोभितं
सुरा सुर सदा सेव्यं तं वन्दे साधु वल्लभं ॐ नमो..

त्रिविक्रमं तपो मूर्तिं त्रिविधा घौघ नाशनं
त्रिस्थलं तीर्थ राजेन्द्रं तं वन्दे तुलसी प्रियं ॐ नमो..

अनन्तं.. आदि पुरुषं अच्युतं च वर प्रदं
आनन्दं च सदानन्दं तं वन्दे अघनाशनं ॐ नमो..

लीलयाद्भुत भूभारं लोक सत्वैक वन्दितं
लोकेश्वरं च श्री कान्तं तं वन्दे लक्षमण प्रियं ॐ नमो..

हरिं च हरिणाक्षं च हरि नाथं हरि प्रियं
हला युधं सहायं च तं वन्दे हनुमत्पतिं ॐ नमो..

श्री हनुमान चालीसा

श्री गुरु चरन सरोज रज, निज मन मुकुरु सुधार ।
वरनऊँ रघुवर विमल जस, जो दायक फल चार ॥

बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन-कुमार ।
बल बुद्धि बिद्या देहु मोहिं, हरहु कलेस विकार ॥

चौपाई

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर, जय कपीस तिहुँ लोक उजागर ।
राम दूत अतुलित बल धामा, अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा ॥

महावीर विक्रम बजरंगी, कुमति निवार सुमति के संगी ।
कंचन वरन बिराज सुबेसा, कानन कुण्डल कुंचित केसा ॥

हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजे, काँधे मूँज जनेऊ साजै ।
संकर सुवन केसरी नन्दन, तेज प्रताप महा जग बन्दन ॥

विद्यावान गुनी अति चातुर, राम काज करिबे को आतुर ।
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया,राम लषन सीता मन बसिया ॥

सूक्ष्म रूप धरि सियहि दिखावा, बिकट रूप धरि लंक जरावा ।
भीम रूप धरि असुर सँहारे, रामचन्द्र के काज सँवारे ॥

लाय सजीवन लषन जियाये, श्री रघुबीर हरसि उर लाये ।
रघुपति कीन्ही बहुत बडाई, तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ॥

सहस बदन तुम्हरो जस गावैं, अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं ।
सनकादिक ब्रह्मादि मुनिसा, नारद सारद सहित अहिसा ॥

जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते, कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते ।
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा, राम मिलाय राज पद दीन्हा ॥

तुम्हरो मन्त्र बिभीषन माना, लंकेस्वर भए सब जग जाना ।
जुग सहस्र जोजन पर भानू, लील्यो ताहि मधुर फल जानू ॥

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं, जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं ।
दर्गम काज जगत के जेते, सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥

राम दुआरे तुम रखवारे, होत न आज्ञा बिनु पैसारे ।
सब सुख लहै तुम्हारी सरना, तुम रच्छक काहू को डरना ॥

आपन तेज सम्हारो आपै,तीनो कोक हाँक ते काँपै ।
भूत पिसाच निकट नहिं आवै, महाबीर जब नाम सुनावै ॥

नासै रोग हरै सब पीरा, जपत निरंतर हनुमत बीरा ।
संकट ते हनुमान छुडावै, मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ॥

सब पर राम तपस्वी राजा, तिन के काज सकल तुम साजा ।
और मनरिथ जो कोई लावै, सोई अमित जीवन फल पावै ॥

चारो जुग परताप तुम्हारा, है परसिद्ध जगत उजियारा ।
साधु संत के तुम रखवारे असुर निकन्दन राम दुलारे ॥

अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता, अस बर दीन जानकी माता ।
राम रसायन तुम्हरे पासा, सदा रहो रघुपति के दासा ॥

तुम्हरे भजन राम को पावै, जनम जनम के दुख बिसरावै ।
अन्त काल रघुबर पुर जाई, जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई ॥

और देवता चित्त न धरई, हनुमत सेई सर्ब सुख करई ।
संकट कटै मिटै सब पीरा, जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ॥

जै, जै, जै हनुमान गोसाई, कृपा करो गुरु देव की नाई ।
जो सत बार पाठ कर कोई, छुटहि बंदि महा सुख होई ॥

जो यह पढै हनुमान चालीसा होय सिद्धि साखी गौरीसा ।
तुलसीदास सदा हरि चेरा, कीकै नथ हृदय में डेरा ॥

दोहा

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप ।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर बूप ॥

॥ सियावर रामचन्द्र की जय ॥

आरती ॐ जय जगदीश हरे . .

ॐ **जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे।**
भक्त जनो के संकट, दास जनो के संकट, क्षण मे दूर करें ॥ ॐ **जय. .**

जो ध्यावे फल पावे दुःख बिनसे मन का, स्वामी दुःख बिनसे मन का।
सुख सम्पत्ति घर आवे, सुख सम्पत्ति घर आवे, कष्ट मिटे तन का ॥ ॐ **जय. .**

मात पिता तुम मेरे, शरण गहूँ मै किसकी, स्वामी शरण पडू मै किसकी ।
तुम बिन और न दूजा, प्रभू बिन और न दूजा, आस करूँ मै जिसकी ॥ ॐ **जय. .**

तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तरयामी, स्वामी तुम अन्तरयामी ।
पार ब्रह्म परमेश्वर, पार ब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी ॥ ॐ **जय. .**

तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्ता, स्वामी तुम पालन कर्ता ।
मै मूर्ख खल कामी, मै सेवक तुम स्वामी, कृपा करो भर्ता ॥ ॐ **जय. .**

तुम हो एक अगोचर सब के प्राण पति, स्वामी सब के प्राण पति ।
किस विधि मिलूँ दयामय, किस विधि मिलूँ कृपामय, तुम को मै कुमती ॥ ॐ **जय. .**

दीन बन्धु दुःख हर्ता ठाकुर तुम मेरे, स्वामी तुम रक्षक मेरे ।
अपने हाथ उठाओ, अपने शरण लगाओ, द्वार पडा मै तेरे ॥ ॐ **जय. .**

विषय विकार मिटाओ पाप हरो देवा, स्वामी कष्ट हरो देवा।
श्रद्धा भक्ति बढाओ, श्रद्धा प्रेम बढाओ, सन्तन की सेवा ॥ ॐ **जय. .**

तन मन धन सब है तेरा, स्वामी सब कुछ है तेरा।
तेरा तुझ को अर्पण, तेरा तुझ को अर्पण, क्या लागे मेरा ॥ ॐ **जय. .**

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे।
भक्त जनो के संकट, दास जनो के संकट, क्षण मे दूर करें ॥ ॐ **जय. .**